मूल्यांकन : चेतना विकास व मूल्य शिक्षा सवंधित वस्तु मानवीय आचरण
कक्षा – 1

शिक्षा पाठ	शिक्षा वस्तु	शिक्षा नीति	शिक्षा वस्तु	शिक्षा पाठ
शरीर,अवयव, मानवीय, गुण, स्वभाव सम्बन्ध, कर्तव्य, दायित्व, आवश्यकता, उपयोगिता एवं प्रयोजन नियतिवादी शब्दों के साथ जैस – अभय करूणा आदि। अधिकाधिक सम्बन्धों में वर्तने वाले शब्दों की सूचना जैसे – अभय, रहना, आदर करना, इंगित करना, उदय होना, इतिहास बनाना।	अक्षर बोध	कक्षा 1 से 5 तथा आज्ञा पालन पद्धति रहेगी। मूल्य– 1) धीरता 2) वीरता 3) उदारता	संख्या बोध	शरीर इन्द्रिय सम्बन्ध सहित संख्या बोध कराना जैसे – पांच उंगली, पांच इन्द्री आदि तीन मानवीय मूल्यों आदि के द्वारा ।

मूल्यांकन : पुस्तक ही को सुरक्षा व सदउपयोग का किया गया प्रबोधन उसका आज्ञा पालन का मूल्यांकन।
कक्षा – 2

सम्बन्धो में वर्तने वाली चरित्र रूपी पाठ जैसे माता बच्चों के समय समय पर प्यार से सेवा करती है। बच्चे मां का आज्ञा पालन करते है आदि। इसी प्रकार पिता और गुरू का आज्ञा पालन करने के सम्बन्ध में और माता– पिता और गुरू का आज्ञा पालन करने के सम्बन्ध में और माता–पिता और गुरू से मिलन वाली सचरित्रवादी पाठ।	सम्बन्धों की पहचान, सम्बन्धों में वर्तने वाली चरित्र रूपी पाठ जैसे – माता बच्चों को समय–समय पर सेवा करती	मूल्य – धीरता वीरता उदारता	वस्तुओं का सामान्य पहचान	पाठ्य सामग्रियां की पहचान उसकी उपयोगिता का बोध, धीरे– धीरे पौधों को पहचान और उसका सामन्य उपयोग, इसी के साथ संख्या का विस्तार बोध जैसा वस्तुओं की संख्या घटाने– बढ़ाने के कम में पाठ

	हैं। बच्चे मां का आज्ञा पालन करते है आदि।			

मूल्यांकन : पुस्तिका सामग्री, स्थान की सुरक्षा, और सदउपयोग आज्ञा पालन का मूल्यांकन। कक्षा – 3

स्नेह, कृतज्ञता, विश्वास जैसा व्यवहारकारी वाक्य रचना जैसे – साथियों के साथ विश्वास, निर्वाह, गुरू, माता, पिता के साथ सम्बोधन कृतज्ञता का निर्वाह– भाई व बहन के साथ गौरव सम्मान का निर्वाह। सम्बन्धों में वर्तने वाली मूल्य और चरित्रकारी पाठ।	सम्बन्धों का सम्बोधन	मूल्य – धीरता, वीरता, उदारता	वस्तुओं की सामान्य उपयोगिता का प्रबोधन, का प्रवबोधन, उपयोग कम का पहचान।	विद्यार्थियों के उपयोग में आने वाली व्यवहार में आने वाली जैसा– पुस्तिका आदि। पाठ्य सामग्री, वस्त्र, आवास, अलंकार और वाहन आदि।

मूल्यांकन वस्तएं सामग्री, वस्त्र, अलंकार, कम का सदउपयोग सुरक्षा और आज्ञा पालन पूर्ण व्यवहार का मूल्यांकन। कक्षा 4

सम्बन्धों में वर्तने वाली व्यवहारवादी पाठ – जैसे समय के साथ कोई बीमार पड़ने पर स्कूल जाने के साथ किसी से मिलने के सम्बन्ध में भोजन, शयन के सम्बन्ध में पाठ आदि। मूल्य चरित्र और नेतिकता का अविभाज्यता, उसका नित्य वर्तमानवादी पाठ जैसे – मां विश्वासपूर्वक अधिकाधिक बच्चों को संरक्षण पोषण करने के रूप	सम्बन्धों में वर्तने वाली चरित्र और व्यवहारवादी पाठ, कर्तव्यों का प्रबोधन	मूल्य– धीरता, वीरता, उदारता	वस्तुओ की सामान्य उपयोगिता का परिचय आवश्यकता का प्रबोधन	मनुष्येत्तर प्रकृति की पहचानने की क्षमता, प्रत्येक विद्यार्थी में होने की सत्यतों का पाठ जैसा जीव जानवर, पौधे, वृक्ष, जलवायु, अग्नि, आदि सभी प्रकृति का दृष्टा मनुष्य है।

में चरित्र को और अधिकाधिक वस्तुओ को बच्चों के हित में सदुपयोग और उसकी रख– रखाव के रूप में सुरक्षा और नैतिकता का इत्यादि।

मूल्यांकन : शिक्षा सामग्री, अलंकार व कक्षा सामग्रियों की सुरक्षा सदुपयोग कार्य– व्यवहार का मूल्यांकन
कक्षा 5

व्यवहार संचेतना का स्पष्ट रूप जैसे माता– पिता, भाई– बहन, पिता–पुत्र, गुरू–शिष्य और मित्र सम्बन्धों में। वर्तमानकरी पाठ, वर्तमान के लिये प्रवर्तन। व्यवहार, संचेतना की अनिवार्यता जैसे – सह–अस्तित्व के लिए सहकरिता और सहभागिता की अपरिहार्यता कर्तव्य और दायित्व की पहचान जैसा उत्पादन कार्यो मे कर्तव्य का व्यवहार कार्य सेवा में दायित्व की पहचान स्वीकृति के लिये प्रवर्तन उसकी वाहन करने की आवश्यकता उपयोगिता तथा प्रयोजनियतावादी पाठ।	सम्बन्धों में वर्तने वाली स्थापित मूल्य एवं शिष्ट मूल्यों का बोध परस्पर व्यवहार में वर्तने वाली चरित्र अर्थात मानव संचेतना वादी चरित्र का पाठ।	मूल्य वीरता, धीरता, उदारता	वस्तुओ की आवश्यकता एवं उनकी उपयोगिता का बोध रासायनिक एवं भौतिक सीमा का ज्ञान।	भौतिक और रासायनिक परिवर्तन प्राणावस्था से पदार्थावस्था, पदार्थावस्था से प्राणावस्था में परिवर्तनशील, रासायनिक एवं भौतिक सीमावर्ती प्रकृति का बोध मानव उसका दृष्टा होने का ऐश्वर्य सम्पन्न ईकाई के रूप में प्रबोधन।

मूल्यांकन : शाला कक्षा, सामग्री, शिक्षा, अलंकार सामग्रियों की सुरक्षा व सदुपयोग शाला और शाला से बाहर विद्यार्थियों का चरित्र चित्रण का मूल्यांकन।

कक्षा 6

कर्तव्य और दायित्व को वहनकारी पाठ जैसा उत्पादन की आवश्यकता, परस्पर सम्बन्धों में व्यवहार की अनिवार्यता। व्यवसाय और चरित्रकारी पाठ जैसा कृतज्ञता आदि स्थापित मूल्यों पूर्वक और शिष्ट मूल्यों सहित सम्बन्धों के साथ वर्तने वाली पाठ चरित्र का आंकलन व्यवहार और व्यवसाय में प्रकाशित होने की तथ्यपूर्ण पाठ समाज के चारो आयाम जैसे– संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था का अविभाज्य वर्तमान का प्रबोधन।	सम्बन्धों को वर्तने वाली शिष्टता का पाठ व्यवसाय मूल्य में अर्पित, समर्पित होने का पाठ।	मूल्य– वीरता, धीरता, उदारता व दया नोट – 6 वीं से 10 वीं कक्षा तक अनुशासनपूर्वक पाठ, पठन कार्य होगी।	प्राण व निष्प्रण कोशिकाओं का स्पष्ट ज्ञान कोशिका परस्पर संगठित होने का गुण, उसी में अर्थात् कोशिकाओं में समाहित रहने का स्पष्ट ज्ञान	पदार्थवस्था में निष्प्राण कोशिकाओं के रूप में होने की सत्यता को स्पष्ट करना, पदार्थावस्था का तात्पर्य मृत, पाषाण, मणी, धातु और उसके समस्त विकारों से हैं। पदार्थावस्था विकसित होकर प्राणावस्था में होना और प्राणावस्था ह्रास होकर पदार्थावस्था में होने की यर्थाथता को स्पष्ट करने वाली पाठ। उसकी साक्षी में वनस्पतियां ह्रास होकर पदार्थो में अर्थात् मिट्टी आदि में परिवर्तित होता हुआ दिखाने, प्रत्येक बीज इसी मिट्टी, गोबर, हवा, पानी और उजालों को पाकर अंकुरित, पल्लवित एवं परिवर्तित होता हुआ दृष्टान्तवादी पाठ।

मूल्यांकन – शाला और शतंय सामग्री, पारवार और पारिवारिक और पारिवारिक कार्य – व्यवहार सामग्रियां का सदुपयोग व सुरक्षा अनुशासना।

कक्षा – 7

धीरता, वीरता, उदारता और दवा की पहचान जैसा प्रत्येक व्यवसाय व व्यवहार कार्य और सेवा की दृढ़ता के रूप में धीरता को।	मानव मूल्य का परावर्तन ही स्थापित मूल्य	मूल्य – वीरता, धीरता, उदारता दया।	परमाणु की पहचान गठनपूर्वक	परमाणु में विकास होने ही सत्यता का पाठ प्रत्येक परमाणु गठनपूर्वक परमाणु में एक से अधिक अंशों का गठन होने की सत्यता का

ऐसी दृढ़ता से विचलित व्यक्ति को दृढ़ता प्रदान करने के रूप में वीरता को, स्वयं की सुविधाओं को आवश्यकतानुसार दूसरों को प्रदान कर प्रसन्न होने के स्वरूप में उदारता को प्रवर्तित करने वाली पाठ और प्रवर्तन जीवन शक्तियों का सामान्य परिचय जैसे मन में होने वाले आशा, वृत्ति में होने वाली तुलन, चित्त में होने वाली चित्रण, वृद्धि में वाली संकल्प और आत्मा में होने वाली अनुभूति।	और शिष्ट मूल्य में परावर्तित होने का प्रबोधन		परमाणु होने ही पहचान एक से अधिक परमाणुओं से रचना अणु अणुओं से रचित पदार्थ पिण्ड की पहचान।	स्पष्ट स्वरूप, प्रत्येक परमाणु में मध्यांश और उसके आश्रित अंश होने की सत्यता का पाठ। जो निससे बना रहता है अर्थात् रचनाए होती हैं। वह उससे अधिक नहीं होती है। इस सिद्धान्त पर प्राण कोशिकाएं और निष्प्राण कोशिकाओं की रचना का पाठ प्रबोधन और कर्माभ्यास विचार शक्तियों का परावर्तन में व्यवसाय अर्थात् उपयोगिता एवं कला मूल्यों को स्थापित करने का पाठ।

मूल्यांकन – शाला और शालेय समग्रियों का सदुपयोग व सुरक्षा परिवार, सम्पर्क एवं गुरूजनों के साथ किये गये व्यवहार का मूल्यांकन।

कक्षा – 8

मनवृति, चित्त, बुद्धि और आत्मा जैसे अक्षय बल और आशा, विचार इच्छा, संकल्प और अनुभव प्रमाण जैसी अक्षय शक्तियां संयुक्त स्वरूप जीवन शक्तियों का परावर्तन एवं प्रत्यावर्तन की विशालता, आवश्यकता, उपयोगिता व प्रयोजनियंता का पाठ। देंखना ही समझना, समझना ही देखना, सिद्धान्त के आधार पर पहचान क्षमता और उसकी अक्षयता का पाठ। अक्षयबल और अक्षय शक्तियों का संयुक्त स्वरूप ही संचेतना होने का पाठ।	जीवन की पहचान जीवन की जागृति की पहचान	मूल्य– धीरता, वीरता, उदारता, दया।	परमाणु में गठनपूर्ण होने ही सत्यता का पाठ	मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ संतुलित सम्बन्ध की पहचान, व्यवसाय ही अनिवार्यता व्यवसाय पद में मनुष्य ही विशेषता व्यवसायकर्ता दृष्टा और निर्माता मनुष्य ही होने ही वैभव का पाठ, मनुष्य मनुष्येत्तर प्रकृति का ज्ञाता होने के मूल कारण में चैतन्य ईकाई होने का पाठ। चैतन्य इकाई गठनपूर्णता से सम्पन्न एक परमाणु होने की पाठ, विचार शक्ति ही व्यवसाय पूर्वक मनुष्येत्तर प्रकृति में उपयोगिता मूल्य और कला मूल्य को

संज्ञानशीलता और संवेदनशीलता का संयुक्त प्रभावशीलन ही जीवन का परावर्तन एवं प्रत्यावर्तन होने का पाठ। समाज के चारों आयाम और जीवन के चारों आयाम के सम्बन्ध में व्यावहारिक पाठ।				(निपुणता और कुशलतापूर्वक) स्थापित करने की व्यवस्था का पाठ। उसकी अनिवार्यता का प्रबोधक।

मूल्यांकन – गांव, मोहल्ला, शाला परिवार में किया गया व्यवहार और चरित्र का मूल्यांकन, शालेय एवं शाला परिसर परिवारीय वस्तुओं का सदुपयोग व सुरक्षा का मूल्यांकन।

कक्षा – 9

चैतन्य शक्तियां अर्थात आशा, विचार इच्छा, संकल्प और अनुभूतियों, शरीर के द्वारा प्रकाशित होने ही व्यवस्था का पाठ जैसा, चैतन्य शक्तियों का संकेत मेघस में होना, मेघस के द्वारा सम्पूर्ण शरीर का संचालित होना, फालत : कार्य व्यवहार सम्पादित होने का जो यथांथ है उसे स्पष्ट करने का पाठ। अधिक गति और शक्ति, कम गति और शक्ति के माध्यम से प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ। संचेतन का परिष्कृत कम में मानव संचेतना का स्वरूपर और न्यायपूर्ण व्यवहार का आधार होने का पाठ समाज मूल्यों का निर्वाह ही न्यायिक होने का पाठ और न्यकिता ही दायित्व होने का पाठ। जीवन का परिचय, जीवन मूल्य का परिचय जीवन मूल्य के अर्थ में मानवमूल्य, मानव मूल्य के अर्थ में व्यवहार मूल्य, व्यवहार मूल्य के अर्थ मे व्यवसाय	मनुष्य जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति का संयुक्त साकार रूप में होने का पाठ न्यायपुर्ण जीवन कार्य व्यवहार विन्यास का प्रबोधन	मूल्य– धीरता, वीरता, उदारता, दया।	चैतन्य ईकाई मूलत : एक परमाणु होने के कारण परमाणु स्थापन–विस्थापन से मक्ति ही गठन पूर्णता का अर्थ होने के कारण गठन पूर्ण ईकाई में अक्षुण्यता स्वयं सिद्ध हो जाते है।	गठनपूर्ण परमाणु की (चैतन्य ईकाई रचना उसकी सीमा, उसकी पहचान उसकी अक्षयशीलता का पाठ। संपूर्ण रचनाएं यांत्रिक होने का तथ्य यांत्रिक अक्षयशील होने का तथ्य, संपूर्ण यांत्रिक क्रिया का दृष्टा, सृष्टा और कर्ता का स्वरूप मनुष्य होने ही सत्य का प्रतिपादन, मनुभय संचेतनाशील होने का तथ्य, वह संचेतनापूर्वक ही उक्त सभी कार्य को सम्पादित करने का तथ्य, अक्षय बल, अक्षयशक्तियों का संयुक्त रूपी संचेतना होने के कारण। संज्ञानशीलता व संवेदनशीलता का सिद्ध होने का पाठ, संचेतना के अभाव में दृष्टापन अर्थात् अनुभव करने की क्षमता नहीं होती है। अनुभव ही प्रमाण परम होने ही पाठ।

मूल्य सार्थक होना ही सदउपयोग और सुरक्षा होने का तथ्यपूर्ण पाठ, तन–मन–धन रूपी अर्थ का सद्उपयोग यही धर्मनीति समाजनीति होने की तथ्य का पाठ फलतः तन–मन–धन रूपी अर्थ का सद्उपयोग और सुरक्षा ही नैतिकता होने ही यह चरित्र और मूल्य से अविभाज्य होने ही तथ्य का प्रबोधन।

मूल्यांकन – तन, मन, धन रूपी अर्थ की सुरक्षा और सदुपयोग सम्बन्धो में कृतकारिक व अनुमोदित व्यवहार व्यवसाय के प्रति कर्तव्य की जागृति मूल्यांकन

कक्षा – 10

विवेक की परिभाषा और इसकी आवश्यकता एवं प्रयोजनियता का पाठ, बौद्धिक, नियम, सामजिक नियम और प्राकृतिक नियम का पाठ, मूल प्रवृत्तियां के स्पष्ट स्वरूपों का प्रबोधन आवेशित गति और स्वभाव गति का प्रबोधन, जीवन की अविरित कियाशीलता और उसका लक्ष्य का बोध शक्तियॉ का परावर्तन, प्रत्यावर्तन के फलस्रूप जीवन कृति की नित्य अभीष्ट की पहचान, राष्ट्र चेतना और समाज संचेतना का अविभाच्य वर्तमान का पहचान समाज का सार्वभौम अभिष्ट जैसा समाधान, समुद्धि, अभय सह– अस्तित्व का पहचान।	जीवन की नित्यता और शरीर की नश्वरता का बोध व्यवहारिक जीवन के लिये आवश्यकीय नियमों का बोध।	मूल्य– धीरता, वीरता, उदारता, दया।	विकास के कम में चारों अवस्था की पहचान चारों अवस्थाओं में विकास का कम सम्बन्ध	विज्ञान की परिभाषा समझकर ही आदमी देखता है, जैसा जिसको जो देखता है उसकी सम्पूर्णता उनके आंखों में नहीं आती, प्रत्येक ईकाई में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म, वर्तने का प्रबोधन

मूल्यांकन – तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा अनुशासन चरित्र सम्बन्धी मूल्यांकन।
कक्षा 10

जीवन तृप्ति का पहचान जैसा समाधान व प्रमणिकता प्रमाण और प्रमाणिकता नित्य प्रबोधन उसकी निरन्तरता आवश्यकता, उपयोगिता और प्रयोजनियता का पाठ।

समाज संचेतना के अर्थ में समाज संचेतना की पहचान जैसा व्यक्ति का परिचय समाज, राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय नित्य सामरस्यता का सूत्र प्रमाणिकता व समाधान होने का पाठ।

अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था की सूत्र, व्याख्या। परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था– 5 आग्राम दस सोपान।

मनुष्य का चारों आयाम व्यवसाय, व्यवहार, विचार और अनुभूति में सामरस्यता का आधार प्रमाणिकता व समाधान होने की व्यवस्था का पाठ।

जीवन समरस्यता पूर्ण मनुष्य ही पूर्ण तथा सामाजिक होने का पाठ।

सामाजिकता मूल्य और मूल्यांकन न्याय सुलभ एवं विनियम सुलभ होने की व्यवस्था का पाठ।

न्याय सुलभता व विनिमय सुलभतापूर्वक ही समाज का चारों आयाम, संस्कृति सभ्यता विधि व व्यवस्था में परिपूर्ण और उसका निरन्तरता होने का पाठ।

1) आंखों में केवल रूप उसमें भी दो आयाम अर्थात रूप में आकार, आयतन, घन तीन आयाम होती है। उसमें से आकार, आयतन ही आंखों में आती है। आकार, आयतन मै ज्यादा से ज्यादा 180" देखने में आता है, का पाठ। देखने से अधिक समझ प्रत्येक मनुष्य में होने का प्रबोधन। जो जितना जानता है वह उतना चाह नहीं पाता, जो जितना चाहता है वह उतना कर नहीं पाता, जो जितना करता है, यह उतना भाव नहीं पाता का पाठ प्रत्येक रचना भौतिक और रासायनिक सीमा में सम्पन्न होने की पाठ इन सबका दृष्टा जीवन होने का पाठ।

2) वस्तु स्थिति सत्य में देश काल दिशा।

3) वस्तु गत सत्य में रूप गुण स्वभाव धर्म का अध्ययन।

4) विज्ञान तकनीकी सम्बन्धी उत्पादन कुशलता व निपुणता का प्रबोधन और कर्माभ्यास।

मूल्यांकन – व्यवहार में चरित्र अर्थात् शिभटता, व्यवसाय में कर्मानययता तथा स्वानुसाशनपूर्वक किया गया तन,मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा का मूल्यांकन।

कक्षा 11

मानवीयता की सीमा में मनुष्य अपव्ययों से मुक्ति होने तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग व सूरक्षा करने योग्य है का पाठ। मानवीयता की सीमा में मनुष्य संयत होने के कारण आवश्यकताए सीमित होने की सत्यता का पाठ। मानवीयता की सीमा में मनुष्य की आवश्यकताएं सीमित होने के कारण अधिक उत्पादन कम उपभोग योग्य होने की व्यवस्था का पाठ प्रत्येक मनुष्य का अभीष्ट और लक्ष्य समन्वय और प्रमाणिकता होने की यथार्थ का पाठ।	मानवीयता ही मानव का स्वत्व होने का प्रबोधन स्वत्व ही स्वतंत्रता और अधिकार का आधार होने का प्रबोधन रहेगी।	मूल्य – धीरता, वीरता, उदारता दया, कृपा, करूणा नोट – 11 वीं से 14 वीं कक्षा तक स्वानुशासन व्यवस्था	विकास के क्रम में किया पूर्णता और आचरण पूर्णता होने और उसकी निरन्तरता होने की सत्यता का प्रबोधन	कारण, गुण, गणित पूर्णक निर्णय पाने की व्यवस्था का पाठ, आंखो में जितना देखने की मिलता है उससे अधिक समझ में आता है, का पाठ। जो जैसा है उसे वैसा समझना ही स्पष्ट समझ अथवा सार्थक समझ होने का प्रबोधन। स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य का प्रबोधन फलतः अस्तित्व कैसा है, का पाठ साथ ही कितना है की आवश्यकतानुरूप होने का पाठ। 1) स्थिति सत्यः सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति ही अस्तित्व सर्वस्व होने का पाठ।

मूल्यांकन – व्यवहार में चरित्र अर्थात, व्यवसाय में कर्माभ्यासिता तथा स्वानुशासनपूर्वक किया गया तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा का मूल्यांकन।

कक्षा 12

गुणात्मक विकास अमानवीयता से मानवीयता से अतिमानवीयता की ओर।	जीवन संचेतना का स्तरों का	मूल्य – 1–धीरता	सामान्य आकांक्षा व महत्वाकांक्षा	उपयोगिता मूल्य व सुन्दरता मूल्य उपयोगिता आहार, आवास, अलंकार,

विकास के इतिहास में तीन व चार पद जैसा प्राणपद, स्तरों में प्रकाशित होने की सत्यता का पाठ। परिष्कृत चेतना ही मानव संचेतना होने, मानव संचेतना ही संज्ञानशीलता और संवेदनशीलता का संतुलित होने का पाठ। संचेतना ही जागृत, अर्द्धजागृत, अल्पजागृत प्रगभेदों में प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ।	समरूप गुणात्मक परिवर्तन के कम में किया व आचरण पूर्णता का प्रबोधन	2–वीरता 3–उदारता 4–दया, 5–कृपा, 6– करूणा	की सीमा में वस्तुओं के निर्माण करने की आवश्यकता उसकी उपयोगिता व प्रयोजनियता का प्रबोधन।	दूरश्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन के प्रयोजन होने का पाठ।

मूल्यांकन – शासन व उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन।

कक्षा 12

जीवन जागृति ही जीवन का परम लक्ष्य होने का पाठ। जीवन जागृति आचरण पूर्णता और जागृति कम में ही किया पूर्णता को व्यवस्था का पाठ। मानव संचेतना पूर्वक ही सह– अस्तित्व होने का पाठ। फलत– तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा सम्पन्न होने का पाठ। जीवन जागृति ही स्वानुशासन का जागृति ही अपेक्षा ही अनुशासन का और जागृति का भास ही आज्ञा पतन का आधार होने का पाठ।				उपयोगी वस्तुओं के निर्माण में विज्ञान और तकनीकी पूर्वक प्रबोधन और कुशलता निपुणता पूर्वक कर्माभ्यास।

मूल्यांकन – स्वानुशासन व उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन।

कक्षा 13

सत्ता में संपृक्त प्रकृति अस्तित्व सर्वस्व। अस्तित्व न बढ़ती है अरूपात्मक अस्तित्व में ही सम्पूर्ण रूपात्मक अस्तित्व कियाशील है। सम्पूर्ण ईकाईयों का परस्परता में अरूपात्मक दिखाई पड़ती है। मूल्य स्वयं में जैसा विश्वास स्वयं में जैसा, अरूपात्मक अस्तित्व है। विश्वासपूर्वक ही परस्पर मनुष्य सह– अस्तित्वशील है। मनुष्य ही मनुष्य का विकास और ह्यास का प्रधान कारण है, जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति सत्ता में नियंत्रित है। सत्ता ही व्यवसाय काल में नियम, व्यवहारकाल में न्याय, विचार काल में समधान, अनुभवकाल में सत्य के नाम से जाना जाता है का प्रबोधन का पाठ। शिक्षा प्रदान करने के लिये योग्यतानुसार उचित कक्षाओं में अवसर प्रदान करने की व्यवस्था का पाठ और अभ्यास।	सत्य–सत्ता में संपृक्त प्रकृति, में गर्भित होने फलनः सत्य में अनुभूत होने पर्यनत विकास के लिये बाध्य होने का पाठ।	मूल्य – 1–धीरता 2–वीरता 3–उदारता 4–दया 5–कृपा	मध्यस्थ किया और मध्यस्थ शक्ति का प्रबोधन	प्रत्येक परमाणु के मध्य मे स्थित अंश मध्यस्थ किया होने का पाठ। मध्यस्थ किया में ही मध्यस्थता शक्ति का नित्य प्रसारण होने का पाठ। प्रत्येक ईकाई सत्ता में संपृक्त होने के कारण उर्जामय फलतः आकर्षण निकर्षण वादी गति कार्य विन्यास प्रबोधन। आकर्षणवादी कार्य विन्यास ही अंशो को परमाणु में गठित होने, परमाणवें, अणुवें, कण और कई कण का संयुक्त स्वरूप, संगठित पदार्थ पिण्ड के रूप में होने का पाठ चाहे प्राण कोशिकाएं हो या निष्प्राण कोशिकाएं। यह सभी रासायनिक भौतिक सीमा में होने और जड़ चैतन्य का संयुक्त आकार मनुष्य इन सबका दृष्टा होने का पाठ तथा सम्पूर्ण माप दण्ड का निर्माण मनुष्य होने का पाठ। उत्पादन कम मे विज्ञान व तकनीकी पूर्वक कुशलता निपुणतावादी पद्धति से कर्माभ्यास।

मूल्यांकन – स्वानुशासन तथा उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन व शिक्षित करने का पाठ।

कक्षा 14

मध्यस्थ किया मध्यस्थ शक्ति के आधार पर सम विषम का संतुलित होने का पाठ। प्रत्येक आवेश सामान्य होने की साथियों का पाठ। काम, कोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य आवेशित गतियां मूल प्रवृत्तियां न होने का पाठ मूल प्रवृत्तियां जीवन का ऐश्वर्य होने का पाठ। मनुष्य में मूल प्रवृत्तियां असंग्रह, स्नेह, विद्या, सरलता और अभ्य (विश्वास) का पाठ परिष्कृत जीवन संचेतना मे इन सभी मूल प्रवृत्तियां वर्तमान होने का पाठ। विकास, विकास का इतिहास जीवन घटना, जीवन, जावनी कम में जीवन जागृति का कार्यकम ही जीवन का कार्यकम होने का पाठ। प्रमाण ही पाठ, पाठ ही प्रबोधन की वस्तु प्रबोधन ही समाधान के रूप मे बोध होने का पाठ।	समाधानात्मक भौतिक व व्यवहारात्मक जनवाद, अनुभावात्मक, अध्यात्मवाद का पाठ।	मूल्य – 1–धीरता 2–वीरता 3–उदारता 4–कृपा, 5– करूणा	अस्तित्व की स्थिरता विकास व जागृति की निश्चयता का पाठ।	सत्ता में संपृक्त प्रकृति ही अस्तित्व सर्वस्व अस्तित्व कैसा है ? सिद्ध हो जाता है। और अस्तित्व कितना है कि आवश्यकता सिद्ध नहीं होती। आवश्यकता उपयोगिता और प्रयोजनियता के अर्थ में ही पहचान होती है। सत्ता अरूपात्मक अस्तित्व, संपृक्त प्रकृति रूपात्मक अस्तित्व, प्रकृति अनन्त ईकाईयों का समूह है। किसी भी एक ईकाई का नाश नहीं होती। सत्ता में संपृक्त प्रकृति सत्ता में अनुभव पर्यंत विकास के लिये बाध्य है। विकास स्वयं में कम है। कम स्वयं में नियति है। नियति स्वयं व्यवस्था है। सत्ता में सम्पूर्ण प्रकृति नियंत्रित है। नियम ही न्याय, न्याय ही धर्म, नियंत्रित है। नियम ही न्याय, न्याय ही धर्म, धर्म ही सत्य, सत्य ही ईश्वर, ईश्वर ही आनन्द है। आनन्द ही जीवन है। जीवन ही नियम है।

मूल्यांकन : स्वानुशासन उत्पादन क्षमता और शिक्षा प्रदान करने की अर्थात आज्ञा पालन कराने की क्षमता का मूल्यांकन।